ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

स्त्री रचनाकारों का कथा साहित्य : आर्थिक मुक्ति का संघर्ष

आज भाग दौड़ भरी जिंदगी में प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को अर्थ देने के लिए 'अर्थ' के पीछे भाग रहा है | स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश की बदलती परिस्थितियों के कारण व्यक्ति के जीवन में 'अर्थ' सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं प्रधान हो गया है | 'अर्थ' ने सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों को भी प्रभावित किया है | एक समय ऐसा था जिसमें लोग 'संतोष' को ही परम धन मानते थे और लोगों का इसमें बड़ा विश्वास भी था परंतु समयानुसार आधुनिक युग की हवाओं ने समाज में अनेक बदलाव लाएं | अब व्यक्ति अर्थ प्राप्ति तथा सुख-सुविधाओं के लिए सभी सीमाओं लांघ रहा है | हम कह सकते हैं वर्तमान समाज पर 'पूंजीवादी सभ्यता' हावी है, हमारे जीवन मूल्य भी मात्र 'अर्थ' पर ही निश्चित हो गए हैं | समाज में 'अर्थ' की भूमिका महत्वपूर्ण है, विशेषतः स्त्री के जीवन में |

समकालीन स्त्री रचनाकारों में स्त्री के संघर्षों के विविध स्तरों को अपने साहित्य लेखन का आधार बनाया है | उसमें से 'आर्थिक मुक्ति का संघर्ष' करती स्त्रियों के जीवन संघर्ष को इस लेख के अंतर्गत प्रस्तुत करने का कार्य किया गया है | आज के सन्दर्भ में कहे तो, आज 'अर्थ' के लिए व्यक्ति कितने दांव-पेंच लगाता है | सीधे-सीधे अपना संपूर्ण जीवन इसकी प्राप्ति के पीछे दौड़कर निकाल देता है | यह समस्या दिन-प्रतिदिन विकराल रूप धारण कर रही है | प्रस्तुत किए जा रहे उपन्यासों के संदर्भों का अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि समकालीन स्त्री रचनाकारों ने स्त्री

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

जीवन के संघर्षों का चित्रण अपने उपन्यासों में किया हैं और यही उपन्यास आज हमारे लिए समाज की विषमताओं और विसंगतियों से जूझती स्त्री के जीवन संघर्ष के साक्ष्य के रूप में उपलब्ध हैं |

प्रस्तुत उपन्यासों में ऐसी स्त्रियों को चित्रित किया गया है जो इस पूंजीपति युग में अपने परिवार का भरण-पोषण के लिए 'अर्थ' जुटाती दृष्टिगोचर होती हैं | जब परिवार में कोई पुरुष कमाता नहीं है या सिर्फ अपनी सुख-सुविधाओं और भोग का सोचता है | घर की चिंता नहीं करता, ऐसी स्थिति में स्त्री घर से बाहर काम कर धन कमाती है तब उसे समाज में पुरुषों के शारीरिक एवं मानसिक अत्याचार और शोषण का शिकार बना दिया जाता है | 'आंवा' में भी नमिता नामक पात्र के माध्यम से लेखिका ने ऐसी स्थितियों में जकड़ी स्त्री की समस्याओं को चित्रित किया है | नमिता एक मेहनती लड़की है, जो कुछ पैसा कमाकर अपने घर की स्थिति सुधारना चाहती है | इसलिए वह कामगार आघाडी के कार्यालय में बैठने लगती है | अन्ना साहब नामक व्यक्ति के प्रति पितृतुल्य भाव रखती है परंतु उनके द्वारा किए गए अशोभनीय व्यवहार के कारण वह तिलमिला जाती है | नमिता जानती है कि उसके घर की स्थिति ठीक नहीं है फिर भी अपने आत्मसम्मान के लिए कार्यालय छोड़ देती है | जिसकी प्रशंसा अंजना वासवानी करते हुए कहती है... "कठिन परिस्थितियों में नौकरी का लोभ छोड़ पाना स्वाभिमानी व्यक्ति के ही बूते की बात है | तुम सचमुच बहुत साहसी हो |"[1] यहाँ स्पष्ट है कि एक स्त्री के लिए अपने सम्मान से बढ़कर कुछ नहीं |

[1] आंवा, पृ.सं.143

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

प्रस्तुत उपन्यास की अन्य पात्र है- शाह्बेन | शाह्बेन 'श्रमजीवी' संस्था चलाती है | जिसमें नमिता जैसी लड़कियों को काम मिलता है | शाह्बेन लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाना चाहती है | 'कामगार आघाडी' कार्यालय की नौकरी छोड़ने के बाद नमिता 'श्रमजीवी' संस्थान से जुड़ जाती है, जहाँ वह पापड़ बेलने तथा अन्य छोटे-मोटे काम कर अपने परिवार का भरन-पोषण करने के लिए संघर्ष करती है | शाह्बेन नमिता जैसी लड़कियों को देख कहती है- "श्रमजीवी औरतों की बाड़ी | बापू ने मेरे को उन्नीस सौं पैंतालीस में मुंबई भेजा कि बाई, तू जाके अनाथ-बेसहारा औरतों की लिए बाड़ी खोल स्वावलंबन सीखा उनको | दो सौ से ऊपर औरतें इधर काम को आती |"[2] .शाह्बेन के यह शब्द स्त्री को आत्मनिर्भर बनाने और बनने के लिए संघर्ष करना सीखते हैं |

संघर्ष करती स्त्री का चित्रण 'नावें' उपन्यास में भी हुआ है, जिसकी मुख्य पात्र मालती नामक एक युवती है | मालती अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद अपने परिवार की स्थिति सुधरने और छोटे भाई को पढ़ाने का सोचती है | नौकरी की तलाश करती मालती को गाजियाबाद में महिला महाविद्यालय में नौकरी मिल जाती है परंतु पैसा कमाते कमाते वह परिवार से कट जाती है | मालती का स्वावलंबी होना उसे आत्मविश्वास से भर देता है | वह अब एक ऐसी स्त्री बन चुकी है, जो अपने ऊपर होने वाले हर अन्याय, अत्याचार, शोषण का पुरजोर विरोध कर सकती है | वह पहले जैसे खुद को परवालंबी , कमजोर, बेसहारा अनुभव नहीं करती है | अब वह किसी का भी विरोध करने के लिए सक्षम है | प्रथम वह सोमजी का विरोध करती है, जिससे उसके शारीरिक संबंध होता है, जिसके चलते

[2] वही, पृ.सं.85

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

वह गर्भवती हो जाती है | सोमजी एक विवाहित पुरुष है | मालती को सोमजी अपने घर ले जाने और समाज में पत्नी का दर्जा देने से इंकार करता है | मालती को अपने अधिकार के लिए संघर्ष करने के क्रम में सोमजी से कहती है- "तब क्या मैं आपके साथ रहूंगी गाजियाबाद में आपके परिवार के साथ | आपने बहुत दूर तक भले न सोचा हो, पर मैंने अपनी जिंदगी के बारे में सोच लिया है, मैं नौकरानी बनकर आपके कुटुंब में रह सकती हूँ, पर रानी बनकर इतनी दूर नहीं |"[3] अपने अधिकारों की मांग करती मालती के यह शब्द स्पष्ट करते हैं कि एक स्त्री तभी अपने अधिकारों और सम्मान की रक्षा कर सकती है, जब वह आत्मनिर्भर हो | ऐसी स्थिति से गुजरने के बाद मालती अपने जीवन के फैसले स्वयं लेना पसंद करती है | मालती एक शिक्षित स्त्री है, जो आजीविका के लिए घर से बाहर निकलती है और दुनिया के मुखौटों से भली-भांति परिचित होती है | वह स्त्री अपनी जीवन स्वतंत्र जीना चाहती है, उसे किसी पुरुष या सहारे की आवश्यकता नहीं है | अपनी इस नई सोच को वाणी देते हुए मालती कहती है- "मैं स्वतंत्र जीवन बिताना चाहती हूँ | इस तरह बंधकर आपकी कृपा पर अवलंबित रहने की चाह अब मेरे मन में नहीं रही है | इस अस्थाई ढह में रहकर क्या करुँगी |"[4] आज स्त्री को पुरुष के साथ की आवश्यकता नहीं है वह अकेले जा सकती है कहीं भी और किसी भी अंजान स्थान पर भी आत्मविश्वास के साथ अपना कार्य पूर्ण कर सकती है | आम तौर पर साधारण स्त्री अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों को चुपचाप रह कर सह जाती है, कभी अपना ही परिवार है यह सोचकर तो कभी समाज क्या सोचेगा यह सोचकर | लेकिन प्रस्तुत उपन्यास में मालती आधुनिक जगत

[3] नावें, पृ.सं. 23
[4] नावें , पृ.सं. 27

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

की एक आत्मनिर्भर एवं स्वाभिमानी स्त्री के रूप में पाठकों के समक्ष उपस्थित है |

कुसुम अंसल ने 'एक और पंचवटी' में साधवी का चित्रण किया है, जो पति का घर छोड़कर अपने माता-पिता के पास आ जाती है | साधवी गर्भावस्था में नौकरी प्राप्त कर लेती है | वह अपने माता-पिता पर बोझ बनना नहीं चाहती | साधवी इसी संदर्भ में अपनी माँ से कहती है, "आप रोने क्यों लगीं अम्मी जैसे आपको मेरी चिंता है | वैसे ही मुझे भी तो अपने बच्चे की चिंता है, उसे कुछ कमी न रह जाए, उसे कोई अभाव नहीं रह जाए इसी से ऐसा अपने लिए नहीं | अपने लिए तो मुझे कुछ नहीं चाहिए और मुझे तो जो मिलता था मिल गया | इससे अधिक और कोई दे भी क्या सकता है |"[5]

'ततसम्' उपन्यास की वसुधा भी साधवी जैसी स्वावलंबी स्त्री है | राजी सेठ के इस उपन्यास की नायिका वसुधा उच्च शिक्षित एक विधवा है जो अपनी आजीविका के लिए किसी पर निर्भर नहीं है | इसी आत्मनिर्भरता के कारण वह पुनर्विवाह को आवश्यक नहीं मानती है | भैया भाभी उसके पुनर्विवाह के लिए बहुत प्रयत्न करते हैं | यहाँ लेखिकाने यह बताने का प्रयास किया है कि आज समाज में पुनर्विवाह को पाप नहीं माना जा रहा है और आत्मनिर्भर स्त्री कैसे अपने जीवन से संबंधित स्वयं निर्णय लेने के लिए सक्षम हुई है |

'अनारो' उपन्यास में मंजुल भगत ने ऐसी स्त्री पात्र को नायकत्व प्रदान किया है, जो ना तो शिक्षित है और न ही वह किसी उच्च वर्ग से

[5] कुसुम अंसल, एक और पंचवटी, पृ.सं.74

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

संबंध रखती है | यह ऐसी स्त्री है जो निम्न वर्ग से है तथा छोटी-सी बस्ती में रहती है | जिसका पति भाग गया है, जिसे अपने परिवार की कोई फ़िक्र नहीं है लेकिन अनारो पति के व्यवहार से निराश होकर घर में हाथ पर हाथ धरे नही बैठती है, ना अपनी दुःख भरी कहानी किसी को बताना पसंद करती है | अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए घर-घर जाकर काम करती है | वह स्वयं शिक्षित नहीं है पर अपने बच्चों को पढ़ाना चाहती है | अनारो यह सब आर्थिक स्वतंत्रता की प्राप्ति के पश्चात ही कर पाती है | 'अर्थ' ही आज हर चीज़ या कार्य के मूल में है | आज पैसा कमाने की होड़ में उच्च शिक्षित वर्ग से लेकर समाज के निम्न वर्ग तक इस होड़ में शामिल है | अनारो भी अपने काम को अधिक महत्त्व देती है, वह अपने काम में ही पति, भाई , सहारा देखती है | उसके शब्दों में "अच्छा काम मिल जाए तो वही पति, वही भाई | जो पत रख ले, वही पति और जो बाह पकड़कर उठा ले वही भाई |"[6] यह आत्मविश्वास के शब्द हैं और यह आत्मविश्वास आत्मनिर्भर होने पर ही पैदा होता है | यह समझ स्त्री ने आर्थिक स्वतंत्रता के बाद ही पायी है | स्त्री जब स्वयं कमाने लगी तो उसे यह अनुभव भी हुआ कि पैसे को किस तरह खर्च करना चाहिए | स्त्री ने एक समझ को प्राप्त किया जो उसे निरंतर ऊँचाइयों को ओर ले जा रही हैं |

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि हिंदी की लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में आर्थिक समस्याओं पर भी विचार व्यक्त किए हैं | आज पूंजीवादी वर्चस्ववादी समाज व्यवस्था में हम रह रहे हैं | उपन्यास की लेखिकाओं ने स्त्री जीवन को इस बीच निकट से देखने का प्रयास किया है तथा उन समस्याओं से गुजरी भी हैं | उन्होंने स्त्रियों की इस स्थिति में फसी स्त्री नि

[6] मंजुल भगत. अनारो, पृ.सं.45

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

दयनीयता और दुर्बलता को निरखा ही नहीं बल्कि परखा भी है | उनकी आर्थिक स्थिति को समझा है , जाना है और अपने विचारों को व्यक्त किया है | वे अपने अभिव्यक्त विचारों से यही इंगित करना चाहती हैं कि आज स्त्री को शिक्षित होना चाहिए और यह अत्यंत आवश्यक है | शिक्षित स्त्रियाँ ही आर्थिक मुक्ति के लिए संघर्ष कर सकती हैं | समाज में हो रही क्रूरता, अत्याचार, अन्याय, शोषण के विरुध्द आवाज उठा सकती हैं | उल्लेखित उपन्यासों की नायिकाएँ पाठकों के बीच संवेदनाएं जगाती हैं तथा सोचने पर मजबूर करती हैं | लेखिकाओं ने जीवन के यथार्थ को परिभाषित करने का नि:संदेह एक सफल प्रयास किया है | इनकी कृतियों को वर्तमान समय में साक्ष्यों के रूप में देख सकते हैं, जो स्त्रियों को क्रांति करने के लिए प्रोत्साहित करती है, यह क्रांति सामाजिक. सांस्कृतिक, धार्मिक आदि व्यवस्थाओं में परिवर्तन के लिए होनी चाहिए | जब तक यह परिवर्तन नहीं होगा तब तक संपूर्ण व्यक्तित्व वाली स्त्री का जन्म संभव नहीं है , मानती हैं |

डाकोरे कल्याणी लिंगुराम

हिंदी विभाग,

केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैदराबाद

मो.नं. ८२०८०४४४१४

Copyright © 2020 Authors